SELCO

Date :

HISTORY (H)

PART - D.

PAPER - VIth.

HISTORY OF INDIA (1550 - 1750)

C. State and Religion :-

Akbar's Religious Idea :-

अकबर की धार्मिक नीति :-

इन सिद्धांतो और आदर्शों के साथ ही दीन - ए - इलाही के कुछ नियम तथा व्यवहार निर्धारित थे। इसमें प्रमुख निम्न है :-

(1) दीन ए इलाही के सदस्य आपस में मिलने पर अभिवादन के लिए 'अल्लाह ह अकबर' और 'जले जलाले ह' कहते थे।

(2) मरने के बाद दिए जाने

Date :

वाले भोज को अपने जीवन काल में ही देते थे।

3. यथा संभव मांस का प्रयोग नहीं करते थे।
4. कम उम्र की कन्याओं तथा विधवाओं के साथ सहवास न करना।
5. धन, सम्मान, जीवन और धर्म बादशाह को अर्पित कर देना।

⇒ दीन-ए-इलाही की समीक्षा:- किसी भी लिहाज से दीन-ए-इलाही कोई नया धर्म नहीं था और न ही उसे धर्म कहना चाहिए क्योंकि इसका न कोई धर्म-ग्रंथ था, न ही निश्चित प्रार्थना, न कोई मंदिर या उपासना का निश्चित स्थान और न ही कोई

Date :

पुरोहित - पुजारी वर्ग था

समकालीन इतिहासकारों में बदायूनी (मुंतखब उत तवारीख) ने दीन ए इलाही और अकबर के धार्मिक विचारों की आलोचना करते हुए इस्लाम के खिलाफ बताया है।

बार्तोली ने इसे अकबर की धूर्तता कहता है। तो स्मिथ इसे अकबर की मूर्खता का उदाहरण बताता है।

यदि दीन -ए- इलाही धर्म की निष्पक्ष रूप से व्याख्या की जाए तो हम देखते है कि यह प्रयास अकबर की मूर्खता का नहीं अपितु उसके समन्वित व्यक्तित्व तथा

Scanned with CamScanner

Date :

तथा राष्ट्रीय आदर्शवाद का प्रतीक है।

यह उसकी राष्ट्रीय चेतना तथा हिन्दू - मुस्लिम एकता की कोशिशों में सफल प्रयास था। इस सबों में एक राष्ट्रीय शासक की उपाधि से भी विभूषित बनाया गया है।

DR. UDAY KUMAR

DR. L.K.V.D. college Tajpur

Scanned with CamScanner